डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा .

Topic - डॉ. भीमराव आंबेडकर और दलित आंदोलन
: एक आलोचनात्मक अध्ययन।
Dr. Bheemrav Ambedkar and Dalit Movement : A critical study.

भारतीय समाज की संरचना ऐतिहासिक रूप से जाति-आधारित रही है, जिसमें 'अस्पृश्य' कहे जाने वाले समुदायों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन से व्यवस्थित रूप से वंचित रखा गया। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से दलित चेतना का उदय हुआ, किंतु उसे संगठित वैचारिक दिशा और राजनीतिक कार्यक्रम देने का श्रेय मुख्यतः डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर को जाता है। आंबेडकर न केवल दलित आंदोलन के महानायक थे, बल्कि आधुनिक भारत के सामाजिक लोकतंत्र के प्रमुख शिल्पी भी थे।

1. सामाजिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

ब्राह्मणवादी सामाजिक संरचना में वर्ण-व्यवस्था ने शूद्रों और अतिशूद्रों को शिक्षा, संपत्ति, मंदिर-प्रवेश और राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखा। औपनिवेशिक काल में पश्चिमी शिक्षा, मुद्रण-प्रेस और आधुनिक विधिक ढाँचे ने सामाजिक सुधार की संभावनाएँ खोलीं। महाराष्ट्र में ज्योतिराव फुले और सत्यशोधक परंपरा ने ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती दी। इसी पृष्ठभूमि में आंबेडकर का उदय हुआ, जिन्होंने दलित आंदोलन को सामाजिक सुधार से आगे बढ़ाकर राजनीतिक अधिकारों और संवैधानिक सुरक्षा की दिशा दी।

2. प्रारंभिक जीवन और शिक्षा :

आंबेडकर का जन्म 1891 में महू (मध्यप्रदेश) में महार परिवार में हुआ। प्रारंभिक जीवन में उन्हें अस्पृश्यता का कठोर अनुभव हुआ—स्कूल में अलग बैठना, पानी के स्रोतों से वंचित रहना आदि। उच्च शिक्षा के लिए वे अमेरिका के Columbia University और इंग्लैंड के London School of Economics गए। वहाँ उन्होंने राजनीति, अर्थशास्त्र और विधि का गहन अध्ययन किया। पश्चिमी उदारवाद, समानता और लोकतंत्र की अवधारणाओं ने उनके चिंतन को गहराई दी।

3. दलित आंदोलन का वैचारिक आधार :

आंबेडकर का मूल उद्देश्य था—समान नागरिकता, सामाजिक न्याय और आत्मसम्मान। उनके विचारों के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं:

जाति-उन्मूलन (Annihilation of Caste) –

आंबेडकर ने जाति को हिंदू धर्म की संरचनात्मक समस्या बताया। उनका प्रसिद्ध ग्रंथ Annihilation of Caste जाति-प्रथा की वैचारिक समीक्षा है। उन्होंने तर्क दिया कि सामाजिक लोकतंत्र के बिना राजनीतिक लोकतंत्र खोखला है।

शिक्षा, संगठन और संघर्ष –

उनका नारा था: "शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो।" शिक्षा को उन्होंने मुक्ति का प्रथम साधन माना।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व –

आंबेडकर मानते थे कि दलितों की वास्तविक मुक्ति राजनीतिक शक्ति से ही संभव है। इसलिए उन्होंने पृथक निर्वाचक मंडल और आरक्षण की मांग की।

आर्थिक दृष्टिकोण –

वे राज्य समाजवाद के समर्थक थे। भूमि के राष्ट्रीयकरण और औद्योगीकरण के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक समानता की वकालत की।

4. प्रारंभिक आंदोलनों और संगठन :

आंबेडकर ने 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की। 1927 में महाड (चवदार) तालाब सत्याग्रह के माध्यम से सार्वजनिक जलस्रोतों पर दलितों के अधिकार की मांग की। इसी वर्ष मनुस्मृति दहन किया गया, जो ब्राह्मणवादी शास्त्रीय परंपरा के विरुद्ध प्रतीकात्मक विद्रोह था।
1930 में नासिक के कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन ने धार्मिक समानता के प्रश्न को राष्ट्रीय बहस का विषय बनाया। इन आंदोलनों ने दलित समुदाय में आत्मसम्मान और राजनीतिक चेतना का संचार किया।

5. गोलमेज सम्मेलन और पूना पैक्ट :

1930-32 के बीच लंदन में आयोजित गोलमेज सम्मेलनों में आंबेडकर ने दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग रखी। ब्रिटिश सरकार के 'कम्युनल अवॉर्ड' ने इसे स्वीकार किया, किंतु महात्मा गांधी ने इसका विरोध किया और यरवदा जेल में अनशन आरंभ किया। अंततः 1932 में 'पूना पैक्ट' हुआ, जिसमें पृथक निर्वाचन के स्थान पर आरक्षित सीटों की व्यवस्था स्वीकार की गई।
पूना पैक्ट को लेकर मतभेद हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार यह दलित राजनीतिक स्वायत्तता की क्षति थी, जबकि अन्य इसे व्यावहारिक समझौता मानते हैं जिसने भविष्य में आरक्षण नीति की आधारशिला रखी।

6. स्वतंत्र राजनीतिक दल और श्रमिक आंदोलन :

आंबेडकर ने 1936 में 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' की स्थापना की, जिसने मजदूरों और दलितों के हितों को जोड़ा। बाद में 'शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन' का गठन किया। वे वर्ग और जाति दोनों को शोषण की संरचनाएँ मानते थे, किंतु भारतीय संदर्भ में जाति को अधिक निर्णायक तत्व समझते थे।

7. संविधान निर्माण में भूमिका :

स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण में आंबेडकर की भूमिका ऐतिहासिक है। वे संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार, समानता का अधिकार, अस्पृश्यता का उन्मूलन (अनुच्छेद 17), विधिक संरक्षण और आरक्षण नीति उनके सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करते हैं।
संविधान के माध्यम से उन्होंने लोकतंत्र को केवल राजनीतिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति का साधन बनाया। उनके अनुसार लोकतंत्र का अर्थ है—"एक व्यक्ति, एक वोट" के साथ-साथ "एक व्यक्ति, एक मूल्य।"

8. हिंदू कोड बिल और महिला अधिकार :

स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि मंत्री के रूप में आंबेडकर ने 'हिंदू कोड बिल' प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य महिलाओं को संपत्ति और विवाह संबंधी अधिकार देना था। व्यापक विरोध के कारण यह पारित नहीं हो सका, जिससे आंबेडकर ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। यह घटना दर्शाती है कि वे लैंगिक समानता के भी प्रबल समर्थक थे।

9. बौद्ध धर्म ग्रहण और सांस्कृतिक क्रांति :

1956 में आंबेडकर ने नागपुर में लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार किया। उन्होंने हिंदू धर्म को जाति-आधारित असमानता का स्रोत माना और बौद्ध धर्म को समानता, तर्क और करुणा पर आधारित धर्म बताया। यह केवल धार्मिक परिवर्तन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आत्मसम्मान की क्रांति थी। इससे दलित आंदोलन को नई पहचान और आत्मगौरव मिला।

10. आंबेडकर और समकालीन नेतृत्व का तुलनात्मक दृष्टिकोण :

आंबेडकर और गांधी के दृष्टिकोण में मौलिक अंतर था। गांधी अस्पृश्यों को 'हरिजन' कहकर सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाते थे, जबकि आंबेडकर इसे संरक्षणवादी मानते थे। वे सामाजिक न्याय को दया नहीं, अधिकार के रूप में स्थापित करना चाहते थे।
जहाँ गांधी जाति-व्यवस्था में सुधार के पक्षधर थे, वहीं आंबेडकर इसके पूर्ण उन्मूलन के पक्ष में थे। इस वैचारिक द्वंद्व ने राष्ट्रीय आंदोलन के भीतर सामाजिक प्रश्न को केंद्रीय बनाया।

11. दलित आंदोलन पर दीर्घकालिक प्रभाव :

राजनीतिक सशक्तिकरण – आरक्षण और प्रतिनिधित्व ने दलितों को प्रशासन, शिक्षा और राजनीति में स्थान दिलाया।

दलित साहित्य और सांस्कृतिक पुनर्जागरण – आंबेडकर की प्रेरणा से मराठी, हिंदी और अन्य भाषाओं में दलित साहित्य का विकास हुआ।

संगठित राजनीति – बहुजन राजनीति की धारा, जैसे उत्तर भारत में उभरी पार्टियाँ, आंबेडकरवादी विचारधारा से प्रेरित रहीं।

वैश्विक विमर्श – आंबेडकर को मानवाधिकार और सामाजिक न्याय के वैश्विक प्रतीक के रूप में मान्यता मिली।

12. आलोचनात्मक मूल्यांकन :

आंबेडकर की रणनीति पर कुछ आलोचनाएँ भी हुईं—
पृथक निर्वाचक मंडल की मांग को कुछ लोग औपनिवेशिक 'विभाजनकारी नीति' से जोड़ते हैं।
वर्ग-आधारित आंदोलनों के साथ सीमित तालमेल के कारण व्यापक किसान आंदोलन से उनका संबंध अपेक्षाकृत कम रहा।
बौद्ध धर्म ग्रहण को कुछ लोग प्रतीकात्मक मानते हैं, हालांकि इसके सांस्कृतिक प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता।
फिर भी, इन आलोचनाओं के बावजूद आंबेडकर का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने दलित आंदोलन को बौद्धिक गहराई, संगठनात्मक ढांचा और संवैधानिक आधार प्रदान किया।

निष्कर्ष :

डॉ. भीमराव आंबेडकर भारतीय दलित आंदोलन के केंद्रीय स्तंभ हैं। उन्होंने सामाजिक न्याय की अवधारणा को संवैधानिक रूप देकर भारतीय लोकतंत्र को समावेशी बनाया। उनका संघर्ष केवल दलितों के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानवता के लिए समानता और गरिमा की लड़ाई था।
आज भी जब सामाजिक असमानता और जातिगत भेदभाव विद्यमान हैं, आंबेडकर का चिंतन प्रासंगिक बना हुआ है। उनका जीवन संदेश देता है कि शिक्षा, संगठन और संवैधानिक संघर्ष के माध्यम से ही वास्तविक सामाजिक परिवर्तन संभव है। इस प्रकार, आंबेडकर और दलित आंदोलन भारतीय सामाजिक इतिहास की एक निर्णायक धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसने आधुनिक भारत के लोकतांत्रिक चरित्र को गहराई से प्रभावित किया।